रविवार, दिनाँक **24-09-2023** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

अन्दर राहवाँ मैं बाहर न जावाँ, सदके जावाँ वारी महाराज।

सदके जावाँ बलिहार जावाँ, साँवले चरणाँ तों जावाँ वारी महाराज।।

अन्दर आवे प्रेम ते प्रीति, बाहर कामना सतावे महाराज।

कामना सतावे ते पई घबरावे, चैन न आवे दिन रात महाराज।।

अन्दर प्यार ते लाडाँ नू देखां, बाहर क्रोध सतावे महाराज।

क्रोध सतावे घर विच झगड़ा पवावे, वैर विरोध दिखावे महाराज।।

साँवले चरणां विच शान्ति आवे, बाहर लोभ सतावे महाराज।

लोभ सतावे रघुनाथ जी दा रस्ता भुलावे, भय दिखावे हरदम महाराज।।

मोह सतावे दुनियाँ विच फंसावे, घबराहट दिखावे हरदम महाराज।।

अन्दर हैन फुलाँ दियाँ माला, बाहर दुःखां दी माला महाराज।

दुःखाँ दियाँ माला ते भरम दिखावन, भरमदी आई तुआडे द्वारे महाराज।।

अन्दर हैन फुलाँ दियाँ सेजाँ, बाहर कंडियाँ दियाँ सेजाँ महाराज।

कंडियाँ दियाँ सेजाँ ते चोभा देवन, शरण मैं आई तुम्हारी महाराज।।

अन्दर हैन फुलाँ दियाँ वर्षा, बाहर तृष्णा दी सर्पनी महाराज।

फुकारे मारे ते ज़हर खिलारे, रक्षा करो तुसीं आप महाराज।।

अन्दर देखां सम सन्तोष, बाहर अहंकार सतावे महाराज।

अहंकार सतावे अभिमान दिखावे, मौत खरीदी हुण आप महाराज।।

दासी ए पुकारदी ए, हुण पंजां तों बचाओ महाराज।

पंजां तों बचाओ पंजे मार मुकाओ, इको रूप दिखाओ महाराज।।

सजनों यह भजन अत्यन्त ही शिक्षाप्रद है। आपने यदि ध्यान से सुना हो तो इसके अन्तर्गत अन्दरुनी व बैहरुनी दोनों वृत्तियों का बहुत ही सहजता से वर्णन किया गया है। आशय यह है कि इस भजन के अन्तर्गत यह समझाया गया है कि जिस इन्सान की सुरत/ख़्याल हर समय संसार के साथ जुड़ा रहता है, उसकी कई प्रकार से कैसी दुर्दशा होती है। इसके विपरीत जिसकी सुरत/ख़्याल अन्दरुनी वृत्ति में यानि आत्म-स्वरूप में स्थिर रहती है उसका जीवन आनन्दमय हो जाता है। इस सन्दर्भ में यदि हमारा ख़्याल-ध्यान संसार में जुड़ा हुआ है तो हमें मानना होगा कि संसार अपने आप में समस्याओं का घर है। जीवन के हर क्षण में कोई न कोई नयी समस्या खड़ी होती है जिसके कारण हम अविचारी बन जाते हैं। परिणामतः जीवन के विचारयुक्त रास्ते पर बने नहीं रह पाते। ऐसा अविचारी इन्सान फिर जो भी करता है, बेसमझों की भान्ति करता है क्योंकि वह भ्रमित-बुद्धि इन्सान होता है। भ्रमित-बुद्धि वही होता है जो आत्म-विस्मृत होता है यानि खुद की शक्ति व गुणों को नहीं जानता। यही कारण है कि वह अज्ञानमय अवस्था को प्राप्त हो मूर्खों की भान्ति हर क्षण दुःख भोगता है और दुःख ही बाँटता है जो अपने आप में मौत यानि जन्म-मरण के चक्र-व्यूह में उलझने जैसी बुरी और नुक्सानदायक बात होती है। सजनों अगर हम इस नुक्सान को प्राप्त नहीं होना चाहते तो हमें इस भजन के अन्तर्गत वर्णित अन्दरुनी वृत्ति में विचरने से प्राप्त होने वाले लाभों को समझना होगा यानि यह जानना होगा कि कैसे सच्चेपातशाह जी ने अफुर अवस्था में आने के लिए और विचारयुक्त रास्ते पर अग्रसर होने के लिए कलुकालवासियों को भिन्न-भिन्न तरीकों से समझाने का प्रयास किया। इन प्रयासों के तहत ही उन्होंने आज के भ्रमित-बुद्धि इन्सानों को शारीरिक भाव-स्वभाव छोड़कर आत्मीयता से परिपूर्ण भाव-स्वभाव अपनाने का आवाहन दिया। इस तरह सबको सम्भलने की युक्ति बताकर उन्होंने सबको पूर्ण इन्सान की भान्ति निष्पाप

जीवन जीने के लिए कहा। जानो अपने लक्ष्य को प्राप्तकर जीवन विजयी होने का यही विचारयुक्त रास्ता है।

इस विचारयुक्त रास्ते पर प्रशस्त होने के लिए आप भी घर में इस भजन को बार-बार पढ़ो और अन्दरुनी व बैहरुनी वृत्ति में क्रमशः प्राप्त होने वाले सकारात्मक व नकारात्मक परिणाम को समझो। कहने का आशय यह है कि एक कागज़ लो और उस पर एक तरफ यह लिखो कि ख़्याल-ध्यान को संसार में जोड़ने से व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक जीवन पर क्या दुष्प्रभाव पड़ता है व दूसरी तरफ यह लिखो कि ख़्याल-ध्यान को अन्दरुनी वृत्ति में आद् अक्षर के साथ जोड़ने से किस आनन्द की प्राप्ति होती है। इस तुलनात्मक अध्ययन से आपको समझ आ जाएगा कि यह जो संसार है वह हक़ीकत में हर क्षण कोई न कोई समस्या पैदा करता रहता है।

इसके विपरीत परमार्थ में तो कोई समस्या है ही नहीं, बस समाधान ही समाधान है। आशय यह है कि जो भी समस्या/फुरना मन में आता है, उसका समाधान तत्क्षण ही हो जाता है। इस तरह मन निरन्तर शान्त रहता है और फूलों की सेज की भान्ति निर्मल हो जाता है। इस निर्मलता के रहते फिर किसी की कोई बात कड़वी नहीं लगती। अतः सजनों आप भी अपने जीवन को आनन्दमय बनाने के लिए इस भजन के अन्तर्गत जो भी सुना है उसको प्रयोगात्मक ढँग से अपने जीवन पर लागू करो। इस संदर्भ में जीवन में जिस कारण भी दुःख आया है और उसकी वजह से जीवन काँटो से भरा हुआ प्रतीत हो रहा है व रोने-झुखने में व्यतीत होता है, उस कारण को तत्क्षण त्याग दो। इसमें यह मत सोचो कि ऐसा करने से क्या नफा-नुक्सान होगा। जानो यदि यह सोचने लग गये तो मोह घेर लेगा। जानो जिसके साथ सबसे अधिक मोह होता है उसी से सबसे अधिक दुःख

प्राप्त होता है क्योंकि उससे कुछ मिलने का लोभ पड़ जाता है। अब लोभ के आगे तो कोई टिक नहीं सकता। लोभवश तो आजकल एक भाई दूसरे भाई के साथ धोखा कर स्वार्थी बन जाता है। इस तरह जब-जब तृष्णा की काली सर्पणी फुकारे मारती है, वैसे-वैसे इंसान की अक्ल मारी जाती है और दिमाग़ पर लोभ हावी हो अहंकार में प्रवृत्त हो जाता है। इस तरह आप कदम-दर-कदम अविचार के रास्ते पर चलते हुए कुरस्ते चढ़ जाते हो। यहाँ याद रखो कि जहाँ सत्य होता है वहाँ निर्मलता होती है और ऐसे इंसान का चोला बेदाग़ व अनमोल होता है। ऐसे इन्सान का ख़्याल फिर शारीरिक स्वभावों से आज़ाद हो जाता है और मन आत्म-दर्शन में स्थित हो जाता है। अब आत्म-दर्शन तो सबसे सुन्दर है। उस जैसी सुन्दरता की प्रतीति कहाँ? उसकी सुन्दरता में जब ख़्याल प्रवेश कर जाता है तो आशा-तृष्णा स्वयंमेव समाप्त हो जाती है क्योंकि उसे फिर सब कुछ मिल जाता है यानि किसी प्रकार की कोई भी इच्छा बाकी नहीं रहती। ऐसा इन्सान तो फिर समेटता नहीं अपितु उदार दिल से जो ज्ञान, गुण उसके पास है, उसे ज़रुरतमन्दों में बाँटता है ताकि अज्ञानमय अवस्था में जो इन्सान है, वह भी विचारयुक्त ख़ुराक खाकर सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर अग्रसर होने के काबिल बन जाए। यह होता है - सजनता का वर्त-वर्ताव। जो सजनता का वर्त-वर्ताव करता है वह खुद जागृति में आता है व सबको जागृति में लाता है। इस हेतु चाहे उसे कोई कटु वचन ही क्यों न सुनने पड़ें, तब भी वह मान-अपमान सम कर जान उन अज्ञानियों को क्षमादान दे देता है और अज्ञानता से उबारने का यत्न करता है। इस विषय में सजनों जानो कि अविचारी से किसी भी तरीके से विचारयुक्त बात करने की उम्मीद करना व्यर्थ है। अतः यह मानकर चलो कि उससे तो भूल होगी ही होगी क्योंकि वह विक्षिप्त मानसिकता में ढल चुका है। अब यदि हम भी उसकी सहायता नहीं करेंगे तो उसकी भूल का सुधार कैसे होगा। निःसन्देह यह तभी हो सकता है जब हम मान-अपमान सम कर जान उसके प्रति वैर-भाव त्याग दें। ऐसा करने पर ही हम मानव धर्म पर ड़टे रह सकते हैं। मानव-धर्म भी सजनों यही कहता है कि किसी को गिराओ मत अपितु सबको अपने सम खड़ा करो और ए विध् निष्कामता से परोपकार कमा सतयुग में प्रवेश कर जाओ। याद रखो यदि आप ऐसा

सुनिश्चित नहीं करते तो सजनों के अन्दर सतयुगी संस्कृति अपनाने के प्रति लगाव कैसे पैदा होगा। सो इस द्वारे के सन्देश को जन जन तक पहुँचाने के लिए सबको जागृति में आना है और अनथक परिश्रम करने से नहीं सकुचाना। कहने का आशय यह है कि आपने सबके सामने अपने मन-वचन-कर्म द्वारा श्रेष्ठतम संस्कृति का आदर्श प्रस्तुत करना है और इन्सानियत की मिसाल बनना है। यहाँ सजनों आप अपने आप को भाग्यवान समझो क्योंकि आप सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से जुड़े हुए हो। अब उनके वचनों की वर्षा तो नित हो रही है। अतः उनके विरुद्ध कुछ भी करने की गुस्ताख़ी मत करना क्योंकि यह अपने आप में नैतिकता से गिरने की बात होगी। यही नहीं, यह जीवन में हर क्षण किसी न किसी समस्या को आमन्त्रित करने की बात होगी। ऐसा होने पर आप समस्या का समाधान नहीं ढूँढ पाओगे और उन्हीं में ही उलझे रहोगे व परेशान रहोगे। अब परेशान रहोगे तो परेशानी ही बाँटोगे। ऐसे में यथार्थ सुख-समृद्धि कैसे आएगी। जानो सम, सन्तोष, धैर्य जैसे गुणों का अन्तर्मन में विकास होना अपने आप में यथार्थ सुख-समृद्धि को प्राप्त होने की बात है क्योंकि ऐसा इन्सान ही पूरी तरह से आत्म-तुष्ट हो पाता है। सो सजनों यह मान लो कि अगर सत्य-धर्म के रास्ते पर स्थिरता से जीवन को आगे बढ़ाना है तो सन्तोष, धैर्य का विकास करना ही होगा और इस सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों को धारणकर प्रयोग में लाना ही होगा। यहाँ याद रखो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का हर शब्द कलुकालवासियों के सुधार और उद्धार के निमित्त है। यह दात कुदरत ने इन्सानों को बख़्शी है अतः धारणीय है। इसमें वर्णित विचारों को धारण करो तभी ये विचार व्यवहार में उतरेंगे अन्यथा समभाव-समदृष्टि नहीं हो पाएगी। समभाव-समदृष्टि होने के लिए यह पुरुषार्थ तो करना ही करना होगा। इसी सन्दर्भ में अब आगे सुनोः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

कैसी हिम्मत दिखाई ओहो, कैसी कीती है चढ़ाई वाह वाह।

देखो विलम्ब ना लाई ओहो, कैसी है ओ रौशनाई वाह वाह।।

इक संग शक्ति ते इक संग लक्ष्मी विच साजन हमारा।

मिटे अन्धेरा आवे चानणा नाले होवे सवेरा।।

हटे रात उमस्या वाली सतवस्तु पाया ए फेरा।

सर्गुण विच सतवस्तु राहवे सच खंड हमारा डेरा।।

ऐसा साज मेरा हर वस्तु पीत पीताम्बर है जेहड़ा।

संख चक्र गदा पद्यमधारी यह ही तो नाम है मेरा।।

उस प्यारे दे मैं संग राहवां सतवस्तु दा साज पावे ओ जेहड़ा।

सतवस्तु दे सतवादी होवन कैसा राज है मेरा।।

सतवादी सच खंड ब्रह्माण्ड हर अन्दर स्थान है जेहड़ा।

हां मैं सर्वव्यापी युग युग रोशन नाम है मेरा।।

(हनुमान जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)

ध्वनिः-

कलुकाल हटने दा आपनूं क्या है फ़िकर।

मैं पिता हूं संग तुम्हारे, फिकर उसनू जेहड़ा पिता मुत्तूं है पुत्र।

कलुकाल हटने दा आपनूं क्या है फ़िकर।।

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ द्वारा कुदरत ने जो जीव-जगत-ब्रह्म का यथार्थ ज्ञान बख़्शा है, उसे प्राप्त कर हमें अपने आप को सौभाग्यशाली समझना चाहिए। इस सन्दर्भ में अपने सौभाग्य को जगाने के लिए हमें केवल एकमात्र परमात्मा के वचनों की पालना करना सुनिश्चित करना होगा। आशय यह है कि संसार में से

जो भी किसी भी माध्यम द्वारा आ रहा है, उसे ग्रहण नहीं करना होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि संसार तो हर माध्यम से हमें अपने पँजे में बुरी तरह से लपेटने के लिए प्रयासरत रहता है। इसीलिए इसकी तरफ से अपना मोह भंग कर देना है। मोह भंग करने का अर्थ है कि हम अपने यथार्थ स्वरूप में आ जाएँ। जब हम अपने आत्म यथार्थ स्वरूप में आ जाते हैं तो हम जान जाते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापक है यानि इसमें, उसमें व सबमें है। इस तरह सर्वव्यापकता का भाव हमारे अन्दर ठहर जाता है और हमारे लिए समभाव-समदृष्टि होना कोई कठिन बात नहीं रहती। इस तरह तेरी-मेरी, मैं-तूं का सवाल समाप्त हो जाता है और शारीरिक स्वभावों से छुटकारा मिल जाता है। फिर हम स्वतन्त्रता से अपने यथार्थ स्वभाव में मज़बूत होकर व मौत के भय से भी निषंग होकर निर्भयता से इस जगत में विचरते हैं। ऐसा होने पर अपनी क्षमताओं का पूरा प्रयोग करते हुए, जिस कारज सिद्धि के लिए परमेश्वर ने हमें इस जगत में भेजा है, उसको सिद्ध कर लेते हैं। सजनों वह कार्य है - जगत उद्धार का, सेवा का व निष्कामी बनने का। जानो यह कारज तभी पूरा हो सकता है जब सत्य को धारणकर हमारा हृदय सचखण्ड बन जाता है और सतवस्तु प्रगट हो जाती है। सतवस्तु के प्रगट होने पर हम सतवादी बन जाते हैं जो कि अपने आप में अफुर अवस्था में आने का यानि संकल्प-रहित अवस्था में स्थित होने का परिचायक होता है। सजनों यही संकल्प-रहित अवस्था ही सतवस्तु की पहचान है व मानवता का स्वाभिमान है। ऐसा होने पर ही अनुभव होता है:-

इक संग शक्ति ते इक संग लक्ष्मी विच साजन हमारा

मिटे अन्धेरा आवे चानणा नाले होवे सवेरा

इस तरह सजनों शक्ति-लक्ष्मी पाकर हम सन्तुष्ट हो जाते हैं यानि हमें आत्मतोष प्राप्त हो जाता है। अब जिसके पास प्रबल भक्ति व शक्ति हो उसे किसी की सहायता की आवश्यकता कहाँ रहती है। यह अपने आप में सर्व-समर्थ होने की बात होती है। ऐसा इन्सान फिर हर हाल में शास्त्र-विहित आज्ञाओं का यानि गुरुमत का पालन करता है और मनमत पर नहीं चलता। आशय यह है कि हृदय

में सतवस्तु का प्रगट हो जाना अज्ञान के बादल के छँट जाने का प्रतीक होता है। ऐसा होने पर, अपने आप जो है बिन सूरजों प्रकाश, वह सर्व छा जाता है और हृदय पूरी तरह से प्रकाशित हो जाता है। तभी तो कहा गया हैः-

हटे रात उमस्या वाली सतवस्तु पाया ए फेरा

सर्गुण विच सतवस्तु राहवे सच खंड हमारा डेरा

ऐसा साज मेरा हर वस्तु पीत पीताम्बर है जेहड़ा

संख चक्र गदा पद्यमधारी यह ही तो नाम है मेरा

सजनों इस शुभ कार्य की सिद्धि के प्रति देरी मत करो क्योंकि यह बहुत बड़ी नादानी है, भूल है व अपना जीवन आप बर्बाद करने की बात है। अतः इन्सान हो तो इन्सानी दिखाओ और यह भूल कदापि मत करना क्योंकि इसका दुष्परिणाम बहुत कठोर व असहनीय होगा जो बार-बार तड़पाएगा व रुलाएगा। अगर ऐसी बुरी अवस्था से बचे रहना चाहते हो तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों को व समस्त बुराईयों पर विजय पाने की युक्ति को समझो। जानो ऐसा करने पर जीवन में एक भी समस्या नहीं आएगी क्योंकि जो भी करना चाहोगे वह तत्क्षण ही कर लोगे। इस तरह हर बात का तत्क्षण ही समाधान मिलता जाएगा और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का दिशा-निर्देश प्राप्त होता जाएगा। यह सजनों अपने आप में महान बनने की बात है। इस महानता को प्राप्त करने हेतु अपनी अक्ल टिकाणे ले आओ और सेवाभाव में आकर अपनी किस्मत का ताला खोल लो। याद रखो इस द्वारे का नियम है - आप तरो कुल सगली तारो यानि अपने पर उपकार करो व कुल दुनियाँ को सही रास्ता दिखाने का परोकार कमाओ। इस तरह परोपकारी प्रवृति में ढलकर अपने जीवन लक्ष्य को पाओ। इसी सन्दर्भ में अब ध्यान से सुनोः-

नए साल का नया लक्ष्य है, आगे बढ़ने और बढ़ाने का

सतवस्तु की संस्कृति को,

जन जन तक पहुँचाने का

जन जन तक पहुँचाने का, हाँ....जन जन तक पहुँचाने का

त्रेता गया, गया द्वापर

कलियुग जाने वाला है

उस युग की अब बात करो,

जो युग आने वाला है

जो युग आने वाला है, हाँ....जो युग आने वाला है

सतयुग में क्या होता है, यह सत्य सबको बताओ जी

ए विध् सबको होश में लाकर

सतयुगी संस्कृति जनाओ जी

सतयुगी संस्कृति जनाओ जी, हाँ....सतयुगी संस्कृति जनाओ जी

समभाव अपनाकर

समदृष्टि में आकर

आओ बढ़े सतयुग की ओर

आओ बढ़े सतयुग की ओर, हाँ....आओ बढ़े सतयुग की ओर

अगर कुदरत का यह आवाहन सजनों समझ में आ रहा है तो इसके प्रति सबको जाग्रति में लाने हेतु आओ अब मिलकर बोलें...

आओ बढ़े सतयुग की ओर...

आओ बढ़े सतयुग की ओर...

आओ बढ़े सतयुग की ओर...

जानना चाहते हो कि सतयुग में क्या होता है.....तो जानो...

सतवस्तु जिन्हां ने पहचान लई, सत् करे ओ वर्ताओ

सत् है ओन्हां दे घर दी रसम, सत् है रसम रिवाज जी

सजनों यह कुदरत का आदेश है कि इस युग परिवर्तन की बात को जन-जन तक पहुँचाओ और इस हेतु सब सजन मिलकर निष्काम भाव से परिश्रम करने में मत सकुचाओ। अतः हिम्मत दिखाओ, पुरुषार्थ दिखाओ और सतवस्तु से नाता जोड़ जीवन सफल बनाओ।

नोटः-

1 सतवस्तु की बात को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अब सब सजनों ने बोलने के योग्य बनना है। इस सन्दर्भ में 'सतवस्तु में क्या होता है' - यह सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित है व 'सतवस्तु' नामक पुस्तक के रूप में संकलित कर आपको दे भी दिया गया है। आप सब सजन इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ें, समझें और इसमें से सतवस्तु के बारे में कुछ भी अपनी इच्छा अनुसार जो पसन्द है, उसे किसी भी भाषा में बोलने की समर्थता दर्शायें। इस विषय में जल्दी ही अब एक कार्यक्रम रखा जाने वाला है जिसमें आपकी काबलियत को परखा जाएगा। अतः अभी से इस सन्दर्भ में अपनी तैयारी करना आरम्भ कर दो। निवेदन है कि अपने बच्चों को अवश्य इस प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना ताकि उनके अन्दर का

स्वाभाविक वातावरण पलटे और वे भी सतवस्तु में प्रवेश पाने के लिए तत्पर हो जाएँ। कार्यक्रम की तिथि शीघ्र ही आपको सूचित कर दी जाएगी।

2 इसी के साथ एक जरूरी सूचना यह है कि कार्तिक की मीटिंग नियमानुसार दिनाँक 22 अक्तूबर 2023 को होनी सुनिश्चित हुई है। इस बात की जानकारी सब स्कूलों व ब्रांचों वालो को दे दें।

सभी सजनों को जय सीता राम जी।